Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. semester — III
Phil. CC — 10
Contemporary western Philosophy

GRB BOOKS

Notes

1 Pragmatism: James's Conception of Truth (जेम्स का सत्य सिद्धान्त)

जेम्स सबसे महत्वपूर्ण अर्थक्रियावादी दार्शनिक हैं। अर्थक्रियावाद वह सिद्धान्त है जो किसी विश्वास को अपने आप में सत्य नहीं मानता है बल्कि इसके फल के आधार पर इसकी सत्यता का निरूपण करता है। अर्थक्रियावाद के लिए ही वास्तव में सत् सिद्धान्त अधिक प्रासंगिक है।

अर्थक्रियावाद की मान्यता है कि निरपेक्ष सत् कोई नहीं है। कोई शाश्वत सत् भी नहीं है। जेम्स ने कहा है कि "सत् हमारे [illegible] अनुभवों के बीच और हमारे बाहर संसार में एक सम्बन्ध मात्र है।" पहले से ही प्रदत्त कोई सत् नहीं है जिसे हम खोजते फिरें। इसके विपरीत सत्य भी तथ्य यह है कि मनुष्य के उद्देश्य रचना करता है। मनुष्य और संसार के बीच जब समंजन की उत्पत्ति होती है तो सत् की उत्पत्ति होती है। जैसे जब हम स्वास्थ्य की बात करते हैं तो क्या स्वास्थ्य कोई वस्तु है जो शरीर में संचार करती है और शरीर को ठीक-ठीक रखता है? नहीं। स्वास्थ्य शरीर की क्रियाशीलता है। स्वास्थ्य शब्द इस बात का संकेत करता है कि शरीर ठीक रूप से परिचालित होते हैं। इसी प्रकार

सुगम पास-बुक
APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

हमारे विचारों और प्रत्ययों का सम्बन्धित व्यापार सत कहलाता है। इसमें सम्पूर्ण जीवन के विचारों को ध्यान में रखा जाता है।

इससे यह स्पष्ट है कि सत प्राय: परिवर्तित होते रहते हैं। सत के परिवर्तन का सुन्दर उदाहरण नक्षत्रों की गति माना जाता था। इसके अनुसार पृथ्वी स्थिर थी और सूर्य आदि नक्षत्र इसकी परिक्रमा करते थे। इस सिद्धान्त से संतोषजनक काम चलता था, इसलिए इसे सत माना जाता था। कुछ समय बाद कापरनिकस ने यह घोषित किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। इस सिद्धान्त ने उन बहुत सी समस्याओं को हल कर दिया जो टालमिक सिद्धान्त से हल नहीं होती थी। अतः कापरनिकसीय सिद्धान्त को अधिक सत्य माना जाने लगा। भविष्य में यदि कोई नया सिद्धान्त प्रस्तुत कर दिया गया तो कापरनिकसीय सिद्धान्त भी असत सिद्ध हो जायेगा। विज्ञान ने जिन सत्यों का उद्घाटन किया है उनके शाश्वत सत होने का कोई प्रमाण नहीं है। विज्ञान ने पिछली कुछ दशाब्दियों में इतनी करवटें ली हैं कि वर्तमान सिद्धान्तों को शाश्वत सत्य मान लेना सम्भव नहीं है। हमें निश्चित और

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

3

Notes

शाश्वत सत्य की आशा नहीं करनी चाहिए। जैसे भाषा के शब्दों का मूल्य बदलता रहता है और उनके अर्थ में परिवर्तन होता रहता है वैसे ही सत्य भी बदलता रहता है। सत्यता ज्ञान की विशेषता है जो जीवन के लिए कारगर होती है। मनुष्य अपने जीवन में बहुत सारे विश्वासों को सत्य मान लेता है। सत्य का सम्बन्ध मानवीय आवश्यकताओं से है। मनुष्य ही सत्य का प्रयोग करता है और उसका मूल्यांकन करता है इसप्रकार मनुष्य के प्रयोग और मूल्यांकन से स्वतंत्र सत्य का अस्तित्व नहीं है। अर्थक्रियावादी का यह विचार निरपेक्ष प्रत्ययवादियों के विचार से मेल नहीं रखता है। क्योंकि निरपेक्ष प्रत्ययवादी मानविय प्रयोग और मूल्यांकन से स्वतंत्र सत्यता का अस्तित्व मानते हैं लेकिन अर्थक्रियावादी दार्शनिक सत्यता को मानविय प्रयोग और मूल्यांकन पर आश्रित मानते हैं। इसप्रकार यह स्पष्ट होता है कि जेम्स के अनुसार कोई भी विश्वास अपने आप में सत्य नहीं होता है। किसी विश्वास की सत्यता का निरूपण उसके फल के आधार पर किया जाता है। अगर उसका फल दैनिक जीवन में उपयोगी कारगर होता है तो उसे

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

सत्य माना जाता है। कोई कथा अथवा सत्यता को कोई भी मनुष्य के द्वारा निर्मित माना है। सत्यता कोई विश्वास का आन्तरिक गुण नहीं है। अगर कोई भी विश्वास उपयोगी नहीं होता है। जिस प्रकार से स्वास्थ्य सम्पत्ति और समृद्धि को मनुष्य प्राप्त करता है, उसी प्रकार किसी भी विश्वास की सत्यता को प्राप्त किया जाता है।

प्रश्न है कि सत्य का अनिवार्य तत्त्व है या नहीं। इस प्रश्न का उत्तर जेम्स भावात्मक रूप में देते हैं। जिस प्रकार ह्यूम ने यह स्वीकार किया था कि कुछ मानसिक प्रत्ययों के बीच अनिवार्य सम्बन्ध पाये जाते हैं। इसीप्रकार जेम्स भी स्वीकार कर लेते हैं कि मानसिक प्रत्ययों के बीच सम्बन्ध की सत्यता अनिवार्य निरपेक्ष तथा अनौपाधिक है। इसकी सत्यता शाश्वत है।

उपयोगिता के सत्यता और बीच सम्बन्ध को लेकर जेम्स ने यह दिखलाने का प्रयास किया है कि सत्यता और उपयोगिता समानार्थक है अर्थात दोनों के बीच एकत्व सम्बन्ध पाया जाता है। अगर कोई विश्वास उपयोगी है तो वह सत्य है और अगर कोई विश्वास सत्य है तो वह उपयोगी है। इसस

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

यह स्पष्ट होता है कि सत्य
भी उपयोगी है। इसमें यह स्पष्ट होता
है कि सत्य ही उपयोगी है, कोई
उपयोगी ही सत्य है।
जेम्स सत्यता को सदैव
मूल प्रत्यय के रूप में स्वीकार करते हैं
साधारणतः मूल प्रत्यय उसे कहा
जाता है जो नैतिकता का आदर्श
सत्य है। "सत्यम शिवम सुन्दरम
को भारतीय दर्शन में मूल प्रत्यय
माना गया है। जेम्स भी सत्य को
एक मूल प्रत्यय के रूप में ही स्वीकार
करते हैं जिसका सम्बन्ध और नैतिक
जीवन से है। सत्य शुभ का ही एक
प्रजाती है। यह शुभ से पृथक
कोई स्वतंत्र धारणा नहीं है।
चूँकि सत्य शुभ का ही एक
रूप है। अतः जो सत्य होता
है इसे हम शुभ भी कहते हैं
कभी-कभी सत्य उचित को शुभ
उचित की संज्ञा दी जाती है।
सत्य भविष्य में
होनेवाले कार्य की ओर संकेत करता
है। आज के सत्य को भविष्य
में इसी प्रकार समझना आवश्यक
जिस प्रकार की परिस्थिति यो इस
समय होगी। मुगल शासन कालका
इतिहास स्वतंत्रता के पूर्व जिस प्रकार
पढ़ाया जाता था उस तरह अब नहीं
इसप्रकार ऐतिहासिक सत्य भी
बदलते रहते हैं। जेम्स के
अनुसार सत्य बिल्कुल
आपेक्षिक है या क्षणिक

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes 1

अनुभव का परिणाम है। जेम्स ने बताया है कि हर स्थिति में सत्यता तीन प्रकार की होती है हमारे विचार जानना तभी सत्य होते हैं जब वे तीनों के अनुकूल हों। जिनमें पहली इन्द्रिय अनुभूति का स्थूल तथ्य है (Concrete Facts of Sense) यह इनको कल्पना और तत्व स्वीकार करते हैं लिए विश्लेषण करता है। यदि हमें विभ्रम न हो तो हम कुछ नहीं देख पायेंगे जो हमारे सामने उपस्थित न हो। यह सम्भव है कि हम उपस्थित वस्तुओं में से कुछ वस्तु देखें और कुछ अनुपस्थित कर दें। किन्तु अनुपस्थित वस्तु को देखने की क्षमता हम में नहीं है। दूसरे प्रकार की अशरीरी वस्तुएँ और उनसे सम्बन्ध हैं। तर्कशास्त्र और गणित के सिद्धान्तों का न कोई मूर्तरूप है और न वे इन्द्रियों के द्वारा जाने जाते हैं। किन्तु हम अपनी इच्छा से उनकी रचना भी नहीं कर सकते हैं। वे सामान्य और अपरिवर्तनीय होते हैं। हम नई धारणायें बना सकते हैं किन्तु पुरानी धारणायें बदल नहीं सकते हैं। तर्कशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त तादात्म्य और विरोध के नियम तथा गुणन जैसे नियम नहीं बदल सकते हैं। तीसरे कोई तर्कवाक्य की रचना

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes!

कारनों से हमारे मानसिक पक्षों में उपस्थित सत्यों का संयोग बनता है। लेकिन ऐसा कोई भी तर्क वाक्य की रचना नहीं की जा सकती है। ऐसे सत्य नहीं बताये जा सकते हैं जो किसी स्थान में विशेष मत सत्यों का स्थापना कर दे और जिनके द्वारा शेष सत्यों से व्याघात उपस्थित नहीं। इन तीन प्रकार के तथ्यों में दूसरा तथ्य बिल्कुल अपरिवर्तनशील है। पहले तथ्य में थोड़ा बहुत परिवर्तन होता है। तीसरे में परिवर्तन अवश्य होता है लेकिन धीरे-धीरे। जैसे-जैसे मानवी ज्ञान का विकास होता है, यह कुछ बदल सकता है।

जेम्स के सत् सम्बन्धी इन सिद्धान्तों से स्पष्ट हो जाता है कि वह बहुत कुछ वस्तुवादी है क्योंकि वह मानता है कि हमारे ज्ञान से स्वतंत्र विश्व की सत्ता है और उसपर हमारे जानने न जानने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि जेम्स मानसवादी नहीं है। संसार के सम्बन्ध में जेम्स की धारणा है कि वह स्थिर और यन्त्रवत् नहीं है, वह विकसित हो रहा है, इसमें प्रायः नवीनताएँ उदित हुआ करती हैं, इसके विकास में मानवमन की स्वतन्त्रता भी कारगर है।

इसतरह हम

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

देखते हैं कि सत्य स्थिर न
होकर परिवर्तनशील है। केवल मनुष्य
जीवन के विचार ही नहीं बदलते बल्कि
वैज्ञानिक सिद्धान्त के सत्य भी
बदलते रहते हैं। जैसे परमाणु पहले
अविभाज्य माना जाता था
किन्तु अब इसका विभाजन
हो गया है। अतः अब इसे
विभाज्य माना जाता है। अतः वह
समय परिस्थिति और स्थान के
अनुसार सत्य बदलता रहता है। इसप्रकार
किसी एक सिद्धान्त या विचार को
हमेशा के लिए सत्य मान बैठना
रूढ़िवादिता का प्रतीक है। इसप्रकार
सत्यता सम्बन्धी जेम्स का यही विचार है।